IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सिंचाई के विभिन्न साधनों के वितरण प्रारूप का एक भौगोलिक अध्ययन

(सीकर जिलें के विशेष संदर्भ में)

A Geographical Study of The Distribution Pattern of Various Means of Irrigation (With Special Reference To Sikar District)

डॉ. विनोद कुमार सैनी

सहायक आचार्य भूगोल

मु. बडी ढाणी, पोस्ट–थोई,

जिला–सीकर (राजस्थान)

vinod.saini42@gmail.com

शोध सारांश

कृषि के लिए अन्य बातों के साथ–साथ जल भी आवश्यक होता है। यह जल कृषि को या तो सीधे ही वर्षा द्वारा प्राकृतिक रूप से प्राप्त होता है या इस जल को कृत्रिम रूप से खेतों तक पहुंचाया जाता है। वर्षा के अभाव में कृत्रिम रूप से खेतों तक जल पहुंचाने की क्रिया को सिंचाई कहते हैं। सीकर जिलें में सिंचाई का बहुत महत्व है। सीकर जिलें में सिंचाई के साधनों में कुओं का प्रमुख स्थान है एवं दूसरा महत्वपूर्ण स्थान नलकूपों का है। नहरों का जिले में अभी पूर्ण अभाव है। यह शोध पत्र सीकर जिले में सिंचाई के विभिन्न साधनों के वितरण प्रारूप का भौगोलिक अध्ययन इस बात का विश्लेषण करता है कि जिले के विभिन्न हिस्सों में सिंचाई साधनों का वितरण किस प्रकार हुआ है, और इसके कृषि उत्पादन पर क्या प्रभाव पड़े हैं। सीकर जिले के कृषि क्षेत्र में सिंचाई के साधनों का वितरण जलवायु और सामाजिक–आर्थिक कारकों के आधार पर भिन्न–भिन्न है। कुछ स्थानों पर भूजल का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है, जिससे जल स्तर में गिरावट आ रही है।

शब्द कुंजी : सिंचाई, कृषि, कुएँ, नलकूप, साधन, सामाजिक, आर्थिक, जलवायु।

भूमिका :

भारत की भौगोलिक परिस्थितियां, विशेषतः यहां की वर्षा, इस प्रकार की है कि कृषि को सफल बनाने के लिए सिंचाई का होना आवश्यक हो जाता है। यहाँ अति प्राचीन काल से ही कृत्रिम सिंचाई के साधनो का उपयोग लगातार किया जाता रहा है। सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है की भारत की भौगोलिक परिस्थिति इस प्रकार की है की यहाँ कृषि मुख्यत मानसूनी वर्षा पर निर्भर करती है तथा अच्छी पैदावार प्राप्त करने और सफलतापूर्वक कृषि करने के लिए सिंचाई अति आवश्यक है। सीकर जिला, राजस्थान

राज्य के एक महत्वपूर्ण अर्ध–शुष्क क्षेत्र के रूप में पहचान जाता है, जहां कृषि अधिकांश ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख हिस्सा है। यह क्षेत्र विशेष रूप से सिंचाई के संदर्भ में चुनौतियों का सामना करता है, क्योंकि यहाँ की जलवायु गर्म और शुष्क है, और वर्षा की मात्रा भी कम है। कृषि उत्पादन को बढ़ाने और निरंतर बनाए रखने के लिए सिंचाई के साधनों की उपलब्धता और उनका प्रभावी उपयोग अत्यंत आवश्यक है। सीकर जिले में सिंचाई के विभिन्न साधन मौजूद हैं, जैसे कुएं, नलकूप, ड्रिप सिंचाई और वर्षा जल संचयन, जिनका वितरण और उपयोग क्षेत्रीय भिन्नताओं के साथ होता है।

अध्ययन क्षेत्र :

सीकर जिला राजस्थान में उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित है तथा यह राजस्थान के थार मरुस्थल के 12 जिलों के अन्तर्गत आता है। सीकर जिले के सम्पूर्ण क्षेत्रफल के अन्तर्गत कुछ भाग मरुस्थलीय क्षेत्र कुछ समतल मैदान तथा कुछ क्षेत्र अरावली श्रेणी के अन्तर्गत आता है। सीकर जिले की उत्तरी–पश्चिमी सीमा चुरु से उत्तरी सीमा झुन्झुनूं से उत्तरी–पूर्वी सीमा हरियाणा राज्य से दक्षिण–पश्चिम सीमा नागौर एवं दक्षिण–पूर्व सीमा जयपुर जिले से लगती है। इसका अंक्षाशीय विस्तार $27^0 21'$ से $28^0 12'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा देशांतरीय विस्तार $74^0 44'$ से $75^0 25'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। सीकर जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7732 वर्ग किलोमीटर है।

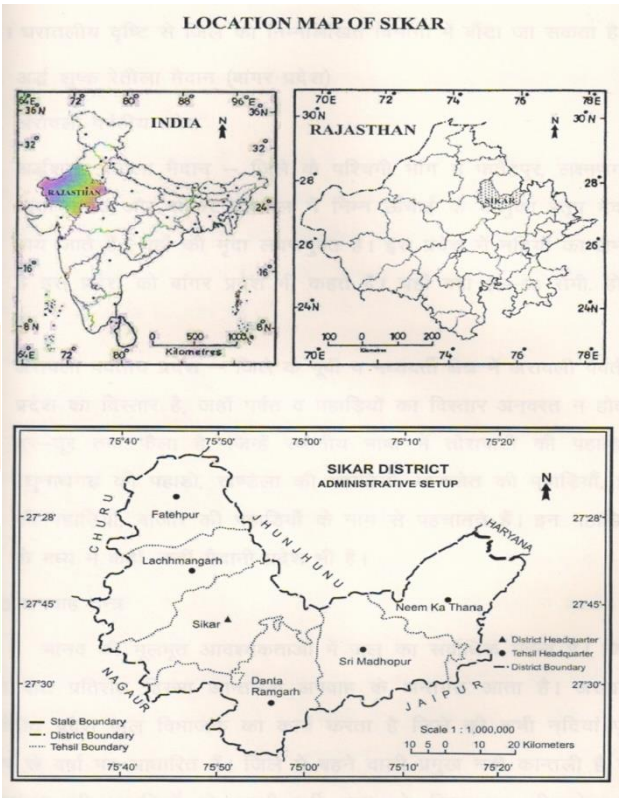

अध्ययन के उदेद्श्य

- सीकर जिले में सिंचाई के साधनों का आंकलन करना।
- सीकर जिले में सिंचाई के साधनों का अध्ययन करना।
- सीकर जिले में कुल सिंचित भूमि के क्षेत्रफल का विवरण प्रस्तुत करना।
- सीकर जिले में स्रोतवार सिंचित भूमि के क्षेत्रफल का विश्लेषण करना।

अध्ययन विधि और ऑकड़ों का संकलन :

अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतो से एकत्र आँकड़ो एवं सूचनाओं पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक तथ्यों का संग्रहण किया गया है। द्वितीय आँकड़ो को जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, जिला कार्यक्रम प्रबन्धन इकाई, कृषि विभाग सीकर, कार्यालय परियोजना निदेशक, भू–अभिलेख सिंचाई विभाग, आदि के तहत अध्ययन किया गया है।

परिचय :

फसलोत्पादन हेतु जल के नियन्त्रित उपयोग की समस्त प्रक्रिया को सिंचाई कहते हैं। इसके अन्तर्गत आवश्यक जल के ग्रहण, भण्डारा व वितरण तथा अतिरिक्त जल के निस्सारण की प्रक्रिया सम्मिलित रहती है। सिंचाई एक ओर मिट्टी में आर्द्रता की कमी को पूरा करके फसलों के अबाध विकास को सुरक्षा प्रदान करती है तो दूसरी ओर एक से अधिक फसलों के उत्पादन द्वारा भूमि की उत्पादकता बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है। राजस्थान एक ऐसा राज्य है जहाँ वर्षा की मात्रा बहुत कम तथा वह भी

अनिश्चित रूप में प्राप्त होती है। साथ ही दो–तिहाई धरातलीय भाग पर मरुस्थलीय तथा अर्द्ध–मरुस्थलीय परिस्थितियाँ पाई जाती हैं। इन दशाओं के कारण वर्ष–प्रतिवर्ष अकाल तथा सूखे का प्रकोप पाया जाता है। इन विपरीत परिस्थितियों के कारण राज्य में सिंचाई का अत्यधिक महत्त्व है। सिंचाई कृषि के उत्पादन में वृद्धि, सतत उत्पादन की प्रक्रिया को सुनिश्चित करने के लिए, फसलोत्पादन में पानी की निरंतरता को बनाए रखने, वर्षा की अनिश्चितता, अनियमितता, अपूर्णता, अकाल, असामयिकता आदि की समस्याओं के समाधान के लिए अति आवश्यक है।

सीकर जिले में सिंचाई के प्रमुख साधन

सीकर जिले में सिंचाई के विभिन्न साधनों के वितरण प्रारूप को देखे तो ज्ञात होता है कि जिले में सिंचाई के प्रमुख साधनों के रूप में कुओं, नलकूप का उपयोग सर्वाधिक किया जाता है एवं जिले में सिंचाई के साधन के रूप में नहर तालाब आदि का अभाव है।

तालिका : 01 सीकर जिलें में सिंचाई साधनों के अनुसार वास्तविक सिंचित क्षेत्रफल (हैक्टेयर)

वर्ष	कुएं	तालाब	अन्य साधन नलकूप	नहरें	विशुद्ध सिंचित क्षेत्रफल
2012–13	53314	–	188962	–	242276
2013–14	25558	–	217601	–	243159
2014–15	23283	–	222789	–	246072
2015–16	20540	–	215752	–	236292
2016–17	14157	–	208882	–	223039
2017–18	13005	–	201805	–	214810
2018–19	8816	–	206107	–	214924
2019–20	5634	–	209747	–	215415
2020–21	4894	–	214069	–	21959

स्त्रोत : कार्यालय जिला कलक्टर (भू. अ.) सीकर।

यदि जिले में विशुद्ध सिंचित क्षेत्रफल के आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि जिले में वर्ष 2012–13 से लेकर वर्ष 2014–15 में विशुद्ध सिंचित भूमि के कुल क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है जिले में वर्ष 2012–13 में जहां विशुद्ध सिंचित भूमि का क्षेत्रफल 242276 हैक्टेयर था वही वर्ष 2014–15 में यह क्षेत्रफल बढ़कर 246072 हैक्टेयर पाया गया है।

कुएँ तथा नलकूप (Well and Tube-wells) :

भू–पृष्ठ के नीचे अपार जलराशि संचित है. जिसका प्रयोग कुओं तथा नलकूपों की सहायता से किया जाता है। भारत में प्राचीन काल से ही सिंचाई तथा पेयजल प्राप्त करने के लिए कुओं का प्रयोग किया जाता है। धरातल पर भूमिगत जल स्तर तक एक छिद्र करके जल प्राप्त किया जाता है। देश के विभिन्न भागों में भूमिगत जल की मात्रा तथा उसका उपयोग भिन्न–भिन्न है। देश के अधिकांश भागों में पर्याप्त भूमिगत जल उपलब्ध है, जिसका प्रयोग कुओं तथा नलकूपों द्वारा सिंचाई के लिए किया जा सकता है। आज कुएँ तथा नलकूप मिलकर भारत की लगभग 58 प्रतिशत से अधिक भूमि को सिंचाई प्रदान करते हैं।

कुएँ

कुओं से सिंचाई करना एक सस्ता एवं सुगम कार्य है। कुएँ दो प्रकार के होते हैं–कच्चे तथा पक्के। कच्चा कुआँ अस्थायी होता है और उन प्रदेशों में खोदा जाता है, जहाँ भूमि का जलस्तर 3 से 5 मीटर की गहराई पर होता है। यह आसानी से खोदा जाता है परन्तु वर्षा ऋतु में गिर जाता है। पक्के कुएँ

अधिक गहराई तक खोदे जाते हैं। ये पक्की ईंटों द्वारा चारों ओर से मजबूती से बाँध दिए जाते हैं। इनके निर्माण में अधिक श्रम तथा धन की आवश्यकता होती है। परन्तु लाभ भी अधिक होता है। इसलिए अधिकतर किसान पक्के कुएँ ही पसन्द करते हैं। सीकर जिलें में प्राचीन काल में सिंचाई के प्रमुख साधनों में कुएं ही है। आंकड़ों के आधार पर जिले में वर्ष 2012 से 2021 तक विशेष परिवर्तन देखने को मिलता है। इस अवधि में सिंचित क्षेत्रफल में गिरावट आई है। जिले में वर्ष 2012–13 में कुओं द्वारा विशुद्ध सिंचित क्षेत्रफल 53314 हैक्टयेर था जो वर्ष 2016–17 में घट्कर 14157 हेक्टेयर हो गया। इसी प्रकार इस क्षेत्रफल में वर्ष 2018–19 में पुनः गिरावट आई इस वर्ष जिले में यह क्षेत्रफल 8816 हैक्टयेर पाया गया। इसी प्रकार वर्ष 2019–20 एवं वर्ष 2020–21 में सीकर जिले में कुओं द्वारा विशुद्ध सिंचित क्षेत्रफल क्रमशः 5634 व 4894 हैक्टेयर पाया गया है। जिलें मे वर्ष 2021–21 तक कुओं की कुल संख्या 76868 है जिनमें से 61087 उपयोगी तथा 15781 अनुपयोगी है।

नलकूप (Tube-wells) :

यह एक साधारण कुए जैसा होता है अंतर केवल इतना ही है कि नलकूप से पानी अधिक गहराई से नल द्वारा निकाला जाता है। जल प्राप्त करने के लिए बिजली की मोटर डीजल इंजन तथा अन्य किसी शक्ति–स्त्रोत का प्रयोग किया जाता है। सीकर जिले में भूमि का सर्वाधिक प्रतिशत नलकूप द्वारा सिंचित पाया गया है। आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो स्पष्ट होता है की जिले में नलकूप सिंचाई का सर्वाधिक लोकप्रिय साधन है एवं जिले में पिछले वर्षों में नलकूप द्वारा विशुद्ध सिंचित भूमि के क्षेत्रफल में वृद्धि भी देखने को मिलती है। जिले में वर्ष 2012–13 में नलकूंप द्वारा विशुद्ध सिंचित क्षेत्रफल 188962 हैक्टेयर था जबकि वर्ष 2014–15 में यह क्षेत्रफल 222789 हैक्टेयर था। इसी प्रकार जिले में वर्ष 2016–17 में यह क्षेत्रफल 208882 हैक्टेयर था जबकि वर्ष 2018–19 में यह क्षेत्रफल जिले में 206107 तथा वर्ष 2019–20 में यह 209747 हैक्टयेर था। तालिका संख्या 01 के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है की जिले में नलकूप द्वारा विशुद्ध सिंचित भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 2014–15 में पाया गया है जो कि 222789 हैक्टयेर था।

आरेख : 01 सीकर जिलें में सिंचाई साधनों के अनुसार वास्तविक सिंचित क्षेत्रफल (हैक्टेयर)

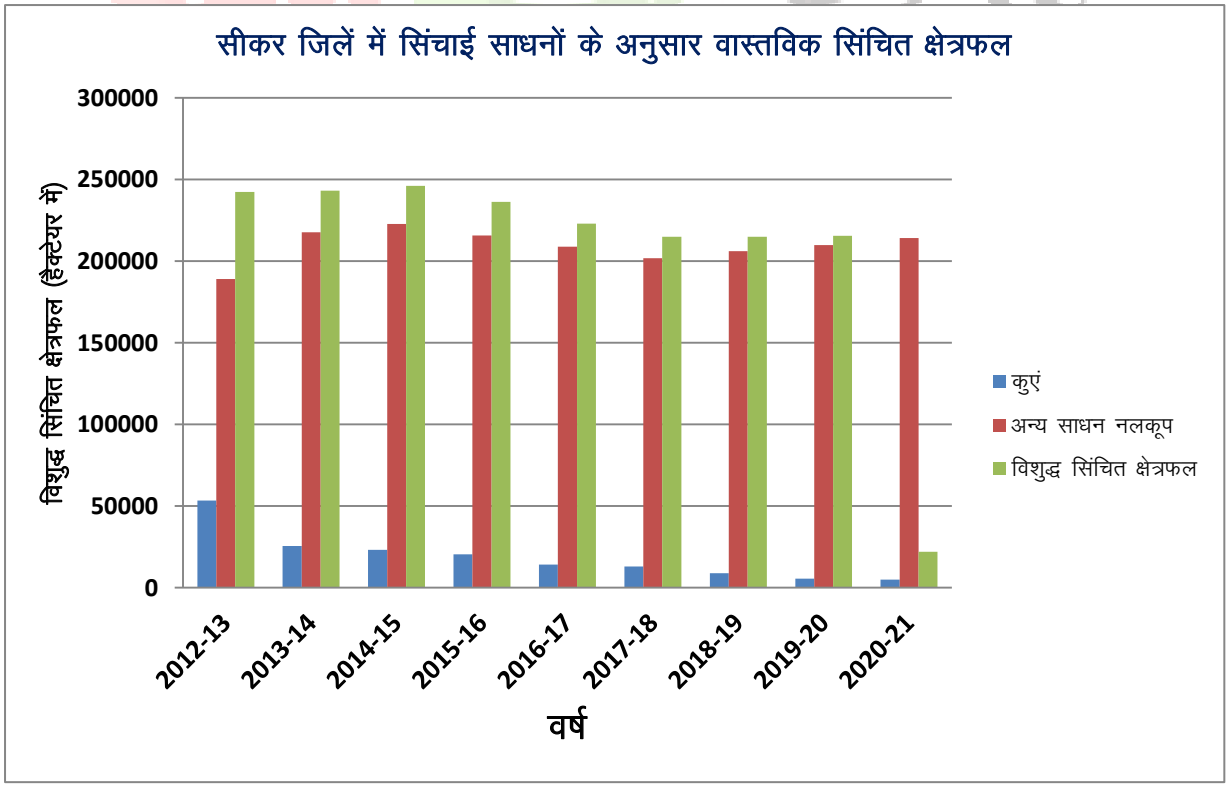

सीकर जिले में कुल सिंचित क्षेत्रफल के आंकड़ों पर दृष्टि डालें तो प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात होता है कि जिले में वर्ष 2012–13 से लेकर वर्ष 2014–15 में सिंचित भूमि के कुल क्षेत्रफल में कमी हुई है जिले में वर्ष 2012–13 में जहां सिंचित भूमि का क्षेत्रफल 289190 हैक्टेयर था वही वर्ष 2020–21 में यह क्षेत्रफल घटकर 261537 हैक्टेयर पाया गया है। सीकर जिले में वर्ष 2012–13 में कुओं द्वारा कुल सिंचित क्षेत्रफल 62756 हैक्टयेर था जो वर्ष 2016–17 में घट़कर 17266 हैक्टेयर रह गया। इसी प्रकार इस क्षेत्रफल में वर्ष 2018–19 में पुनः गिरावट आई इस वर्ष जिले में यह क्षेत्रफल 10365 हेक्टयेर पाया गया। इसी प्रकार वर्ष 2019–20 एवं वर्ष 2020–21 में सीकर जिले में कुओं द्वारा कुल सिंचित क्षेत्रफल 7218 हैक्टेयर पाया गया है। जिलें मे वर्ष 2021–21 तक कुओं की कुल संख्या 76868 है जिनमें से 61087 उपयोगी तथा 15781 अनुपयोगी है।

तालिका : 02 सीकर जिलें में सिंचाई साधनों के अनुसार कुल सिंचित क्षेत्रफल (हैक्टेयर)

वर्ष	कुएं	तालाब	अन्य साधन नलकूप	नहरें	कुल सिंचित क्षेत्रफल
2012–13	62756	–	226434	–	289190
2013–14	30154	–	262223	–	292377
2014–15	26252	–	263265	–	289517
2015–16	25649	–	269217	–	294866
2016–17	17266	–	249570	–	266836
2017–18	15899	–	248219	–	264118
2018–19	10365	–	250723	–	261089
2019–20	7218	–	254285	–	261537
2020–21	7218	–	254285	–	261537

स्त्रोत : कार्यालय जिला कलक्टर (भू. अ.) सीकर।

आरेख : 02 सीकर जिलें में सिंचाई साधनों के अनुसार कुल सिंचित क्षेत्रफल (हैक्टेयर)

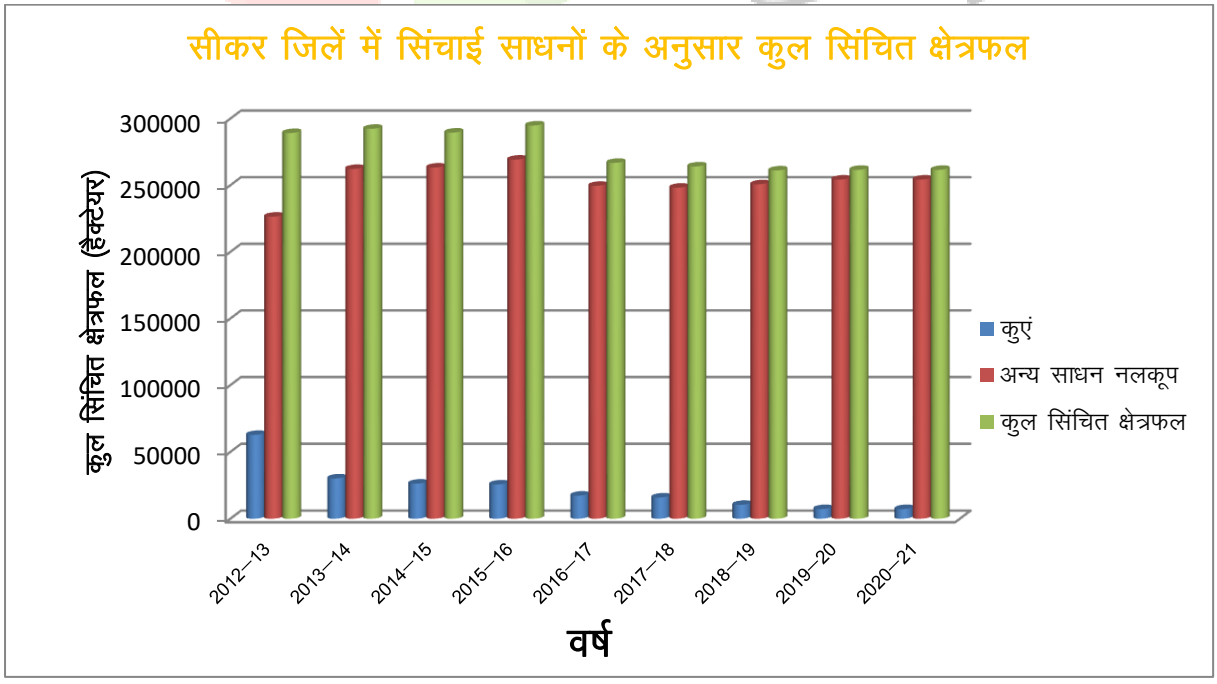

सीकर जिले में पिछले वर्षों में नलकूप द्वारा सिंचित भूमि के क्षेत्रफल में वृद्धि भी देखने को मिलती है। जिले में वर्ष 2012–13 में नलकूंप द्वारा कुल सिंचित क्षेत्रफल 226434 हैक्टेयर था जबकि वर्ष 2015–16

में यह क्षेत्रफल 269217 हैक्टेयर था। इसी प्रकार जिले में वर्ष 2016–17 में यह क्षेत्रफल 249570 हैक्टेयर था जबकि वर्ष 2018–19 में यह क्षेत्रफल जिले में 250723 तथा वर्ष 2019–20 में यह 254285 हैक्टयेर था। तालिका संख्या 01 के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है की जिले में नलकूप द्वारा कुल सिंचित भूमि का सर्वाधिक क्षेत्रफल वर्ष 2015–16 में पाया गया है जो कि 269217 हैक्टयेर था।

सिंचाई के विभिन्न साधनों का कृषि उत्पादन पर प्रभाव

सिंचाई साधनों का असमान वितरण : सीकर जिले में सिंचाई के विभिन्न साधनों का वितरण अत्यधिक असमान है। कुछ क्षेत्रों में ड्रिप सिंचाई जैसी आधुनिक तकनीकों का प्रभावी उपयोग हो रहा है, वहीं अन्य क्षेत्रों में भूजल का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है, जिससे जल स्तर में गिरावट आ रही है। इसके परिणामस्वरूप, जिले के कुछ हिस्सों में कृषि उत्पादन अधिक है, जबकि कुछ क्षेत्रों में सिंचाई के साधनों की कमी के कारण उत्पादन में कमी देखी जाती है।

भूजल संकट : सीकर जिले में सिंचाई के लिए प्रमुख रूप से भूजल का उपयोग किया जाता है, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग ने जलस्तर में गिरावट का कारण बना है। जलाशयों की सीमित उपलब्धता के कारण, अधिकांश किसान बोरवेल और ट्यूबवेल पर निर्भर हैं, जिससे भूजल की खपत अत्यधिक हो रही है। इसके परिणामस्वरूप, जल संकट की गंभीर समस्या उत्पन्न हो रही है, जो कृषि उत्पादन में अस्थिरता ला रही है।

आधुनिक सिंचाई प्रणालियों की भूमिका : ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई जैसी आधुनिक सिंचाई प्रणालियाँ प्रभावी साबित हो रही हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहां जल की कमी है। इन प्रणालियों से जल की बचत होती है और कृषि उत्पादन में स्थिरता आती है। हालांकि, इन प्रणालियों की उच्च लागत और तकनीकी प्रशिक्षण की कमी के कारण इनका उपयोग सीमित है। सरकार और कृषि विभाग द्वारा इन प्रणालियों को बढ़ावा देने से सिंचाई की स्थिति में सुधार हो सकता है।

वर्षा जल संचयन का महत्व : वर्षा जल संचयन का उपयोग सिंचाई के साधनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, इस प्रणाली का उपयोग सीकर जिले में सीमित है, फिर भी यह जल संकट को दूर करने का एक प्रभावी तरीका हो सकता है। यदि इसे ठीक से लागू किया जाए और किसानों को इसके लाभ के बारे में जागरूक किया जाए, तो यह सिंचाई प्रणालियों के सुधार में मददगार हो सकता है।

सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता : सरकारी योजनाएँ जैसे प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना और अन्य जल प्रबंधन योजनाएँ सीकर जिले में सिंचाई संसाधनों के विस्तार और सुधार के लिए महत्वपूर्ण साबित हो रही हैं। हालांकि, इन योजनाओं का कार्यान्वयन क्षेत्रीय भिन्नताओं के कारण असमान रूप से हुआ है। कुछ क्षेत्रों में इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन ने सिंचाई के साधनों में सुधार किया है, जबकि अन्य क्षेत्रों में समस्याएँ बनी हुई हैं।

जल प्रबंधन में सुधार की आवश्यकता : जिले में सिंचाई के संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन के लिए जल प्रबंधन में सुधार की आवश्यकता है। किसानों को जल संरक्षण और जल पुनर्चक्रण के महत्व के बारे में जागरूक करना आवश्यक है। इसके अलावा, सिंचाई प्रणालियों का अनुकूलन और आधुनिक तकनीकों का प्रचार–प्रसार जिले की सिंचाई व्यवस्था में सुधार कर सकता है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है की सीकर जिले में प्रमुख रूप से सिंचाई के दो ही साधनो नलकूप एवं कुओं का ही किया जा रहा है, तथा इसमें भी सर्वाधिक सिंचित भूमि का क्षेत्रफल जिले में नलकूपों द्वारा सिंचित पाया गया है। यद्यपि जिले में कुछ क्षेत्रों में कुएं ही सिंचाई के प्रमुख

स्रोत के रूप में उपलब्ध है तथापि नलकूप द्वारा सिंचाई का प्रतिशत जिले में अधिक पाया गया है। जिले में नहर तालाब एवं अन्य किसी भी साधन द्वारा सिंचाई का प्रतिशत शून्य पाया गया है। कृषि जिले के जनसमुदाय द्वारा प्रमुखता से किया जाने वाला कार्य है अतः जिले में कृषि के उन्नत विकास हेतु सुदृढ़ नहरी तंत्र के विकास के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण कदम सरकार द्वारा उठाये जाने की अति आवश्यकता है। सीकर जिले में सिंचाई के विभिन्न साधनों का वितरण और उनका प्रभाव कृषि उत्पादन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। कुछ क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाओं का अभाव कृषि उत्पादन में कमी का कारण बन रहा है, जबकि अन्य क्षेत्रों में जल संकट और भूजल स्तर में गिरावट जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। सिंचाई प्रणालियों के सुधार और जल प्रबंधन की योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन से कृषि उत्पादन में वृद्धि और जल संसाधनों का सही उपयोग संभव हो सकता है। भविष्य में सिंचाई के साधनों के वितरण में सुधार और जल संकट की समस्याओं के समाधान के लिए नीति–निर्माताओं को ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, सीकर (2011 से 2022) : आर्थिक और सांख्यिकी विभाग, जयपुर।
2. भल्ला एल. आर. (2022) : राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर।
3. जाट, बी.सी. एवं जाट सुरेशचन्द्र (2021) : राजस्थान का भूगोल, मलिक बुक कम्पनी, जयपुर।
4. शर्मा एच.एस. और एम. एल. (2010) : राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
5. राजस्थान आर्थिक सर्वेक्षण (2023) : आर्थिक और सांख्यिकी विभाग, जयपुर।
6. प्रशासनिक प्रतिवेदन (2022) : आर्थिक और सांख्यिकी निदेशालय, सांख्यिकी विभाग, जयपुर।

पत्र पत्रिकाएं

- ❖ राजस्थान सरकार : जिला सांख्यिकी रुपरेखा सीकर, आर्थिक और सांख्यिकी विभाग, जयपुर।
- ❖ राजस्थान सरकार : जिला दर्शन, जिला सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, शासन सचिवालय, जयपुर।
- ❖ राजस्थान सरकार : जिला सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, सीकर।
- ❖ राजस्थान सुजस : कार्यालय जिला सूचना एवं जनसम्पर्क जयपुर।